Sukriti

6th Edition

2021

TARKESHWAR NARAIN AGRAWAL TEACHERS' TRAINING COLLEGE

Harigaon, P.O. - Sanya Brahatta, Bhojpur, (Ara) Bihar-802162

Visit us at : www.tnabedcollege.com | TNATTC HARIGAON | tnattcharigaon

(Recognized by ERC, NCTE Bhubaneswar | Affiliated to A.K.U., Patna) | NCTE CODE-APE01012

(SPONSORED BY T.N. AGRAWAL EDUCATIONAL & SOCIAL WELFARE FOUNDATION)

संस्था का कुलगीत

शिक्षक–प्रशिक्षण का जो अनवरत आधार है,
तारकेश्वर नारायण अग्रवाल प्रशिक्षण महाविद्यालय सृजन का द्वार है
गोद गंगा में मिली मुनि विश्वामित्र की छाया इसे,
दिव्य वातावरण में पोषित मिली भव्य काया इसे
कुल पिता का बरसता स्नेह संरक्षण यहाँ,
कर्म की मिलती उन्हीं से प्रेरणा हर क्षण यहां
माताजी की दिव्य मृदु ममतामयी रसधार है
तारकेश्वर नारायण अग्रवाल प्रशिक्षण महाविद्यालय सृजन का द्वार है,
यह पवित्र पावन शान्ति स्थल ज्ञान के प्रशिक्षण हेतु है
सभ्यता एवं संस्कृति के समन्यव का सुमंगल सेतु है,
संतुलन होता यहाँ यूँ आचरण और विचार में,
ताकि वह तृण सा न बह जाए समय की धार में,
ज्ञान बल का इस तरह होता यहाँ संचार है,
तारकेश्वर नारायण अग्रवाल प्रशिक्षण महाविद्यासलय सृजन का द्वार है,
वीर कुँवरसिंह की ये धरती करती वीरता का जागरण
सृजित करती है आपसी सद्भावना संवेदना का आवरण,
कर के शिक्षा ग्रहण युवाओं की बदलती चाल है
यह शिक्षक बनाने की सुगम टकसाल है,
विश्व फिर लगता उन्हें अपना सगा परिवार है
तारकेश्वर नारायण अग्रवाल प्रशिक्षण महाविद्यालय सृजन का द्वार है,
शिक्षक–प्रशिक्षण का जो अनवरत आधार है।

रचनाकार
डॉ॰ मनोज कुमार उपाध्याय
(सहायक प्राध्यापक)

TARKESHWAR NARAIN AGARWAL TEACHERS' TRAINING COLLEGE HARIGAON

EDITORIAL BOARD

Sukriti

6th Edition

Advisor
DR. KRISHNA MURARI AGARWAL
Secretary

Editor
Dr. M.K. Upadhyay

Chief Editor
Dr. Rahul Kr. Pandey
Principal

Sub-Editor
Sri Vijay Kumar Jha

Member of Editorial Board

Smt. P. M. Jena, Asst. Prof. in Edn.
Sri Ajit Kumar Singh, Asst. Prof. in S.S.
Smt. Bindi Kumari, Asst. Prof. in Edu.
Sri Ramu Prasad, Asst. Prof. in B.Ed. (Bio. Science)
Sri Chandan Kumar Gupta, Asst. Prof. in B.Ed. (English)

Printing & Typing Assistant

Smt. Nilam Kumari
Sri Sunny Deo Nirala
Sri Gaurav Kumar

Inspiring Celestial Soul of the College

LATE TARKESHWAR NARAIN AGRAWAL

**(Ever-Sparkling Flower- Petals of "Ashirvachan"
by him from his heavenly abode)**

सुकृति-2021

अनुक्रमणिका

क्र॰	शीर्षक	लेखक
1.	चेयरपर्सन का संदेश	श्रीमती शांति अग्रवाल
2.	कुलपति का संदेश	प्रो॰ सुरेन्द्र प्रताप सिंह
3.	फाउण्डर चेयरपर्सन का संदेश	अनिता कृष्णा
4.	सचिव का संदेश	डॉ॰ कृष्ण मुरारी अग्रवाल
5.	कोरोना कविता	शैलेन्द्र कुमार मेहता
6.	जिन्दगी का सफर	नीरज कुमार
7.	कोरोना	कलिमअंसारी
8.	दहेज	अरूण कुमार सिंह
9.	पिता	आशीष कुमार
10.	माँ	मनीष कुमार
11.	माँ शायरी	मनीष कुमार
12.	शिक्षक	स्नेहलता कुमारी
13.	चलो गाँव की ओर	नीरज तिवारी
13.	नारी	प्रिया कुमारी
14.	भावना और संवेदना	बिन्दी कुमारी
15.	कविता	रितु कुमारी
16.	शिक्षक	नीशि सिंह
17.	बेटी	आरती कुमारी
18.	मेहनत रंग लाई	सुभाशिनी रंजन
19.	हम हैं भारतीय नौजवान	आरती कुमारी
20.	तिरंगा	पुनीता कुमारी
21.	जीवन में एक गुरु तो होना चाहिए	सीमा कुमारी
22.	रफ कॉपी	सीमा कुमारी
23.	वो थे मेरे पापा	कामिनी कुमारी
24.	माँ की ममता	मिस संजना
25.	पर्यावरण	माया कुमारी
26.	राह में मुश्किल होगी हजार	सुनीता कुमारी
27.	नारी हूँ मैं	ज्योति कुमारी
28.	भारत के गाँव, नारी	पूजा श्री
29.	पुस्तकालय	नीलम कुमारी
30.	दहेज प्रथा	अंशु कुमारी
31.	सीखने के स्तंभ	रामू प्रसाद
32.	मन जब कर रहा हो बहुत तंग करिये 'योग'	कमलेश कुमार
33.	जीवन की सीख, (सीख) थॉमस अल्वा एडिसन	हरेन्द्र यादव
34.	सबमें विराजते विवेकानन्द	हरेन्द्र यादव
35.	डॉ. कलमा के अनमोल वचन	अनुपमा कुमारी
36.	शिक्षा का व्यावसायीकरण	विजय कुमार झा
37.	भारतीय रेलवे अतीत से वर्तमान तक	अजित कुमार सिंह
38.	(निबंध) डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलमा	अनुपमा कुमारी
39.	मूल्य शिक्षा क आवश्यकता	आर. के. विश्वकर्मा
40.	रामचरित की मनोवैज्ञानिकता	डॉ॰ मनोज कुमार

Founder Chairperson Message

I am really happy to know that college E- magazine; "Sukriti" is going to be published soon. Magazines the symbol of penmanship of the students and teachers of the institution. Student's imaginative, cognitive and effective power is strong and viable which is manifested in the magazine. The word 'Sukriti' means beautiful constitution, so I hope that the magazine will be a memorable piece of work which will prove beneficial for the readers. it will also add the crowning glory of this college which is famous for its teaching training skill and methods. My best wishes for its upsurge in popularity to stratospheric heights.

Jai Hind. Jai Sukriti.

SMT. SHANTI AGARWAL
Founder Chairperson
TNA Social and Educational Welfare Foundation,
ARA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि तारकेश्वर नारायण अग्रवाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हरिगाँव, आरा द्वारा वार्षिक ई–पत्रिका "सुकृति" के षष्ठम् संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

हम सभी अवगत है कि मनुष्य एवं मानव समाज में शिक्षक की भूमिका बेमिशाल होती है। शिक्षको के बिना एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षकों को प्रभावी शिक्षा प्रदान करने में सक्षम बनाने में प्रशिक्षण महाविद्यालय की भूमिका अहम् होती है। एक प्रतिभावान उचित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक ही बालकों का जन्मजात प्रतिभा एवं क्षमता का उचित एवं विकास करने में सहायक सिद्ध होता है।

पत्रिकाएं ज्ञान संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देती रही हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तारकेश्वर नारायण अग्रवाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय हरिगाँव, आरा द्वारा प्रकाशित की जा रही ई–पत्रिका "सुकृति" अपने मनोज्ञ नाम की तरह ही अपने उच्च उद्देश्य को आवश्य प्राप्त करेगी। ई–पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्रचार्य, शिक्षक एवं छात्रगण को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामना सहित,

प्रो॰ सुरेन्द्र प्रताप सिंह
कुलपति
आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Message

A college magazine is like heavenly Eden Garden with beautiful flowers in form of finest, freshest, fairest Hindi, English, Urdu and Sanskrit poems which tugs at the heart-strings of the readers, and its sweet music make them unforgettable. The publication of the magazine 'Sukriti' is a utopian scheme which comes to its fruition after months of sweated-labour brainstorming efforts that need resilience of restless minds of the faculty. I am also thankful to the principal and students who identified the worth of a college magazine and spent hours of writing, pruning, modifying, remodifying before the submission of the materials. I also confirm the credit to Editorial Board which energized effort got manifested in the publication of 'Sukriti'. Let this magazine treble the name and fame of this promising college which only motto is-

"Live as if you will die tomorrow, learn as if you will live forever."

Let the E-magazine's lustre shame the radiance of the thousand of celestial suns, and outshine the healing halos of thousands of moons.

Thanking You !

SMT. ANITA KRISHNA
Founder of Chairperson
T.N.A.T.T.C. Harigaon

Secretary Message

Magazine speaks the language of the learners and teacher educators/ Teachers. It is actually the face of the institution which reflects the beauty of the language across the curriculum. Its humorous stories make smile even the stone-hearted loners, and its poems bear the freshness of the hundreds of the full blossoming Eden's. The college magazine, **'Sukriti'** itself personifies the beautiful creation, in form, feature, behaviour, conduct and above all the service to society. The college magazine is really the outcome of the sweated-labour persistent perseverance, eternal endeavour of the Principal, Faculty, Editorial Board, Students and the Non-Teaching staff.

I feel indebted to all of them along with the **Hon'ble V.C. Aryabhatt Knowledge University, Patna**, other university Teachers' Official and others who spared their most valuable time for the E-magazine. Last but not the least, the publication of 'Sukriti' proves beyond doubt that no matter how difficult and treacherous one's destination is, but it is smaller, shorter than human will.

Dr. Krishna Mumari Agrawal
Secretary
TNATTC, Harigaon

Chief-Editor Message

I am happy to know that the sixth edition of the annual magazine **"Sukriti"** of Tarakeswar Narayan Agarwal Teacher Training College is being published. Annual magazine is the mirror of any educational institution. The work of the college can be assessed by seeing and understanding the printed materials of the magazine.

It is a powerful medium for children through which they can communicate their creativity, creativity, literary interest well. Students after taking education will become teachers in future. Become an ideal teacher by getting better teacher skills in college. Only an ideal teacher can make children a good citizen of the country. Make good use of your talents while keeping yourself safe in this global pandemic. Man is the best among all beings because he is rational.

We get wisdom only through education. One should always try to make life successful by being rational and living within human limits. God keep everyone healthy. Best wishes to all.

Dr. Rahul Kumar Pandey
Principal
TNATTC, Harigaon

कोरोना पर कविता

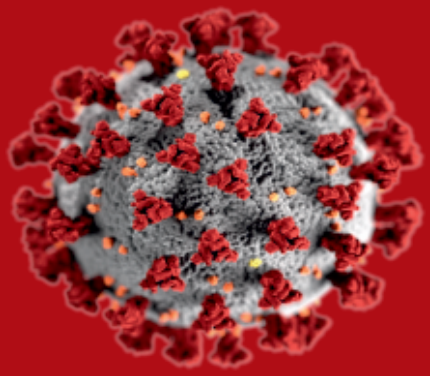

ओ कोरोना तू कहां से आया।
तेरा आना किसी को ना भाया।
मम्मी बोली हाथ धोए।
घर के बाहर कही ना जाए।
सखा-सहेली सब भूल जाए।
स्कूल की टीचर की याद सताए।
तेरा भ्रम इतना सताए।
ओ कोरोना तू बता हमें,
छोटे-छोटे बच्चें अपना दिल कैसे बहलाए।
कोरोना तुमसे नहीं डरते हम।
हममें है, तुमसे लडने का दम।
सोशल डिस्टेंसिंग निभाएंगे।
सरकार के रूल्स को अपनाएंगे।
घर में बैठ कर तुझे हराएंगे।
और फिर अपना जीवन खुशहाल बनाएंगे।

शैलेन्द्र कुमार मेहता
रौल नं0-76
सत्र-2020-22 (B.Ed.)

जिन्दगी का सफर

ख्वाहिश नहीं मुझे मशहूर होने की,
आप मुझे पहचानते हो,
बस इतना ही काफी है।
जिन्दगी का ले सफर भी
कितना अजीब है, दोस्तों,
शामें कटती नहीं और,
सल गुजरते चले जा रहें हैं।
एक अजीब सी,
दौड़ है ये जिन्दगी,
जीत जाओ तो कई,
अपने पीछे छूट जाते है, और
हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं।
मैनें समंदर से सीखा है,
जीने का सलीका,
चुपचाप से सहना, और
अपनी मौज में रहना।
मालूम है, काई मोल नहीं है मेंरा फिर भी,
कुछ अनमोल लोगों से रिस्ता रखता हूँ।

नीरज कुमार
रौल नं.0-82
कोर्स-बी॰ एड॰, सत्र-2020-22

कोरोना

कोरोना आई दहशत लाई।
यह विश्व महामारी का रूप बनाई।
सभी जगहों पर हाहाकार मचाई।
सबको अपनी शक्ति दिखाई।
जहाँ पेड़ पौधें की कमी छाई।
वहाँ इसने अपना कब्जा तेजी से जमाई।
गाँवों में भी पैर फैलाई।
शहरों में तांडव मचाई।
सभी देशों के स्वास्थ्य विभाग पर उँगली उठाई।
स्वास्थ्य विभाग की कमियों से परिचय कराई।
लोगों के एक दूसरे से मिलने पर प्रतिबंध लगाई।
प्रकृति क्या होती है, ये सबको बताई।
अभी तक इसकी तीसरी लहर गई।
पहली में अपनी परिचय कराई।
दूसरी ने तो सबको रुलाई।
तीसरी लहर क्या करेगी।
इसकी जानकारी दूसरी ने दिलाई।

कलिम अंसारी
रौल नं॰-71
कोर्स-बी॰ एड॰, सत्र-2020-22

दहेज

देख मेरे घर आज लक्ष्मी आई है।
सबके चेहरे पर मुस्कान छाई है।
पिता ने अपनी दुःख मुस्कान से छुपाई है।
अभी से ही दहेज की चिन्ता सताई है।।
पिता पर हल्की बोझ आई है।
आगे बेटी की पढ़ाई है।
आठारह की होगी कि नहीं।
शादी की चिन्ता छा जाएगी।
अभी से ही दहेज की चिन्ता सताएगी।
उसके लिए लड़का खोजा जाएगा।
शादी में अड़चन बहुत आएगा।
शादी के नाम पर व्यापार शूरू हो जाएगा।
लड़के के पिता को दहेज मांगने
में शर्म भी नहीं आएगा।
लड़की के पिता को दहेज की चिन्ता सताएगा।
शादी के दिन सबलोग खुशियाँ मनाएंगे।
सरकार के द्वारा बनी
नियम की धज्जियां उड़ाएंगे।
दहेज लेना देना बंद करो सबको बताएंगे।
अपने ही लड़का की शादी में
दहेज लेना सही बताएंगे।
लड़की के शादी के बाद उसके
पिता की चिन्ता और बढ़ जाएगी।

अरूण कुमार सिंह
रौल नं0-42
सत्र-2020-22 बी0 एड0

पिता

माता तना तो पिता जड़ है।
इनका फल है संतान।
तीनों मिले तो वृक्ष कहलाती है।
ये वृक्ष एक परिवार के समान
सबको तो तना और फल नजर आते।
जबकि तना जड़ पर तो फल तना पर है विराजमान।
जड़ पर रहता दोनों का बोझ ।
जड़ ही करता बेड़ा पार ।
जड़ कमजोर पड़े तो दोनों मुरझाती है।
जड़ मजबूत पड़े तो दोनों जगमगाती है।
जड़ ही करता सबकुछ,
पर श्रेय तना को जाती है
क्योंकि फल तना ही लगाती है।
माता तना तो पिता जड़ है।
इनका फल है संतान।

आशीष कुमार
रौल नं॰–70
सत्र–2020–22, बी॰ एड॰

माँ

माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है,
जब माँ ने मुझे जन्म दी, दर्द की श्रृंगार की,
उसके बाद भी स्तनपान कराके मुझे जीने की वरदान दी।
माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है।
जब मैं शैषवावस्था में था, रोना मेरी पहचान,
तब भी सुन माँ दौडीचली आती ,
माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है।
जब मैं बाल्यावस्था में था,
नटखट होना मेरी पहचान,
माँ तो सब समझती, करती खूब लाड–प्यार,
माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है।
जब मैं किशोरावस्था में था,
जल्दबाजी मेरी पहचान, कोई कार्य तेजी से हो,
सराहा जाए मेरा काम, कोई सराहे या न सराहे,
माँ तब भी मेरे साथ।
माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है।
अब मैं प्रौढावस्था में हूँ, व्यस्तता मेरी पहचान,
बीबी पूछती कितना कमाए,
बच्चे पूछते खाने के लिए क्या लाए,
एक माँ ही तो है तो पूछती,
बेटा खाना खाए कि नहीं खाए,
माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है।
काश मैं भी लड़की होता, माँ होने का गर्व प्राप्त होता,
जिस दर्द से माँ गुजरी, उस दर्द का एहसास होता,
माँ तो माँ होती है,
ममता की असीमित भंडार होती है।

मनीष कुमार
रौल नं॰–40, सत्र–2020–22, बी॰ एड॰

माँ शायरी

ओ मुझे ढूंढने आई होगी।
आँचल में कुछ छुपाई होगी।
माँ है जनाब,
उस आंचल ने मेरे लिए स्विस बैंक लाई होगी ।
देखे ना दोस्तों माँ कुछ खाने के लिए लाई है।
लगता है माँ ने भी खाना नहीं खाई है।
क्योंकि उसकी आदत है।
पहले हमें खिलाई है फिर ओ खाई है।
देख ना दोस्त माँ का खत आई है।
इसमें भी खाने-पीने की बात छाई हैं।
लगता है कुछ दिनों से वो कुछ ना खाई हैं।
क्योंकि अपने हाथों से खिलाने के लिए अंतिम बार बुलाई है।
जब भी तुझे चोट आई होगी ।
पहले माँ शब्द ही मुख से आई होगी।
इतने पैसों का क्या करेगा मेरे दोस्त।
जब मेरी माँ वृद्ध आश्रम ही सजाई होगी।
माँ से मिली सजा ही कुछ और है।
माँ से पिटाने की मजा ही कुछ और है।
गुस्से में पीट देती अधिक
पर बाद में दुलार पाने की मजा ही कुछ और है।
उठ ना मेरे दोस्त ।
गाँव से माँ आई है।
दो दिन की सफर बिताई है।
गाँव से ही हमें खिलाने के लिए खाना लाई है।
इसका स्वाद कभी भूल नहीं पाएगा।
क्योंकि मसालों के साथ प्यार मिलाई है।
बिहार से केरल हमसे मिलने आई हैं।

मनीष कुमार
वर्ग-बी॰ एड॰
रौल नं॰-40, सत्र : 2020-22

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्त्तव्यनिष्ठा जिससे
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वो मेरे पथ दर्शक हैं जो,
मेरे मन को भाते ,
वो मेरा शिक्षक कहलाते
हम स्कूल रोज हैं जाते,
शिक्षक हमको पाठ पढाते,
दिल बच्चों का कोरा कागज,
उस पर ज्ञान अमिट लिखवाते,
वो मेरे शिक्षक कहलाते।
जाती धर्म पर लड़े ना कोई,
करना सबसे प्रेम सिखाते,
हमें सफलता कैसे पानी,
कैसे चढ़ना शिखर बताते,
वो मेरे शिक्षक कहलाते।

स्नेहलता कुमारी
वर्ग- बी॰एड॰
रौल नं॰-84, सत्र : 2020-22

चलो गाँव की ओर

नीचे घुटनों तक गर्म पानी,
ऊपर आग बरसता सूरज,
खून चूस लेने को उद्धत तैयारी हुई जोंके
आरे की मानिंद धार वाले घोंघे,
जिनके छूने भर से कट जाते हैं तलवे
जो मरते हैं सिर्फ जलती हुई तेल की बाती से
और इधर-उधर भटकते केकड़े
इन सबके बीच निर्भय, सजग, चतुर राज निहारते,
धान के एक-एक बिचड़े को कसौटी पर कसत,
उचित एवं बराबर दूरी तथा गहराई में रोपती।
करती एक दूसरे से हँसी-ठिठोली, रार और प्यार
छोड़ती नहीं मस्ती करने का कोई कण उधार।
समवेत स्वर में गाती कजरी, बारहमासा, झूमर
फेंक देती है सभी पर कादो, देखती नहीं उमर,
राहगीरों से वसूल लेती है सावनी,
बोल-बतिया कर बाते लुभावनी।
मुखड़े पर चमकते श्रम बिन्दू बतलाते हैं,
कोमल काया के भीतर की जिजीविषा दर्शाते हैं,
दिखाई पड़ता है धन की गरीबी में मन की अमीरी
छिपी है इनके जिस्म में कोई अशरीरी,
शुद्ध भारतीय संस्कृति के होते हैं दर्शन
भारतीय गाँव ही है, भारतीयता के दर्पण,
कहाँ जाते हो चलो गाँव की ओर
यहीं बंधी है तेरी उन्नति की डोर,
गाँवो में बसता है अपना भारत महान्
और इसी हरियाली में है भारत के प्राण।

नीरज तिवारी
सहायक प्राध्यापक
टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, हरिगाँव

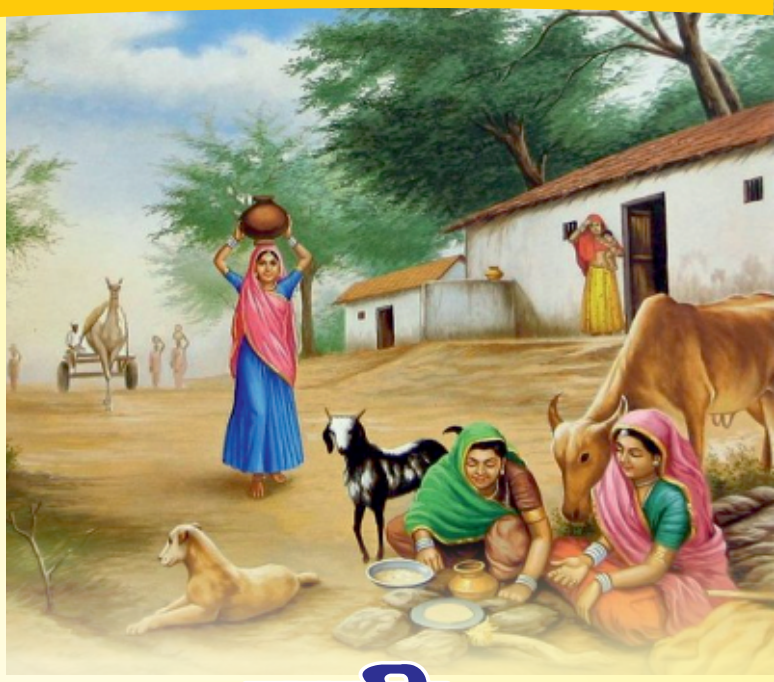

नारी

नारी तेरा हर रूप महान है,
तुझसे ही सुन्दरता और तुझसे ही संसार है।
सृष्टि के अनूठे तोहफे पे सब कुछ कुर्बान है।
ममता का उद्‌गार लिये,
प्रेम के लिए प्यार लिये,
करूणा की मूरत है तू,
जहाँ में सबसे खूबसूरत है तू
तूझसे ही मातृत्व सुख
तुझसे ही वात्सल्य है,
तुझसे ही है सृष्टि
भगवान का तू रूप हैं।
क्षमा का समावेश लिये,
छाया रूप तेरा विधि का विधान हैं।
नारी तेरा हर रूप महान है।

प्रिया कुमारी
रौल नं॰-72
वर्ग-बी॰ एड॰, सत्र : 2020-22

भावना और संवेदना

बाहर झर-झर बूंदें गिर रही हैं,
रात काली हो चली है, लेकिन
मेढकों और झींगूरों के समवेत
सुनाई दे रहे हैं। मुझे बारिश
का मौसम अपना सा लगता है
यह मौसम ना अधिक गर्मी,
ना अधिक सर्दी मेरे जीवन सा संभाव।
आस-पास के पेङ-पौधों को देखकर
लग रहा है कितने खुश है, नये-
नये अंकुरण देख मन को सुकून
मिल रहा। आजकल गर्मियों में
पानी की कमी को देखते हुए
बारिश का इंतजार और धरती
जल्दी- जल्दी वर्षा की बूंदों को
अपने गुल्लक में जमा करने की
कोशिश कर रही हूँ कितना सोचती
है यह धरती हमारे लिए, सच
ये मौसम जरूरी है, सूखे को
हरे होने के लिए जरूरी है।
साल भर का चावल जो खतम
हो जाते हैं उनको फिर से उगाने
के लिए जरूरी है हरी-भरी
खुशी को घर लाने के लिए ये मौसम
जरूरी है। हमारी आँखें की नमी
बचाए रखने के लिए बस ये मौसम जरूरी है।
हर बारिश के बाद स्कूल
जाने की सोचती हूँ लेकिन स्कूल
पहुँचने के बाद बूँदों का नर्तन शुरू हो जाता है।
इस मौसम के नाम के साथ मन में
कुछ आवाजे उठने लगती है जैसे
छप-छप टीप-टीप। मैं समेटना
चाहती हूँ इन बूँदों को
इस मौसम में हर कोई
भींग जाये ये मौसम मुझे
परेशान भी करता है जब
देखती हूँ तेरी गलियों में
बारिश का पानी पूरा भर गया,
है याद आता है वो पानी में
खड़े होकर दोस्तो के साथ नाव बनाकर तैरना।
आज मन उदास हो गया है,
शहर का धूल बारिशों से शांत हो गया है, लेकिन
मैं बेचैन हूँ मुझे बच्चों से यह
कहने का मन हो रहा है।
अपनी-अपनी कक्षाओं में जाओं
तबीयत खराब हो जाएगी।
स्कूल के बगीचे, आर्ट रुम,
म्यूजिक रुम सब सुन-सान पड़ा है।
ये बच्चे अगली बारिश में स्कूल बगीचे कॉलेज
में आयेंगे कि नहीं? मन इन
बूँदों के बावजूद सूखा पड़ा है,
जैसे आज का इन्सान वैसा ही
मौसम का मिजाज भी होता
जा रहा है इन्सान प्रकृति से
दूर होता जा रहा है और
ये दिखाएँ कि प्रकृति खुद
अपना प्रकोप दिखा रहा है,
खुद भी रोता है,
मुझे भी रुला के जाता है,
ये बारिश का मौसम ,
उसकी याद दिलाता है।

बिन्दी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, हरिगाँव

कविता

बच्चों खेलों खेल कबड्डी,
तुम मजबूत बनाओ हड्डी
पढ़कर जब तुम थक जाओ
खेल कूद में ध्यान लगाओ
खेल-खेल में स्वस्थ हो जाओ
धरा सूर्य की करे परिक्रमा
मौसम बारह बरसे मास
लायेसर्दी, गर्मी और बरसात
आओ करें; तु की बात
हम बालक भोले भाले हैं।
हिल-मिलकर रहने वाले हैं।
हरदम बढने वाले हैं हम बालक
देखो हम बम के गोले हैं।
मन नहीं हमारे मैले है।
हम सदा शान से खेले हैं हम बालक!
हम सदा शान से खेले हैं। हम बालक!
कैसी प्यारी घड़ी हमारी टिक-टिक
करती समय बताती सुबह सवेरे
हमें जगाती हरदम चलती कभी न थकती।
सूरज गोल चन्दा गोल
धरती भी गोल मटोल
राटी गोल, थाली गोल,
खाने की नरंगी गोल
पढने में मत होना गोल
मुर्गा बोला कुकडु-कू, लेकिन जल्दी क्यूँ
रात देर से सोया मैं सपनों में खोया था।
जल्दी सोना जल्दी उठना नियम बहुत अच्छा है।
जो भी इसका पालन करता वही बच्चा अच्छा है।
गुड़िया मेरी छोटी-छोटी ठुमक-ठुमक चाल चलेगी
मीठी-मीठी बात करेगी गुड़िया मेरी रानी
गुड़िया बडी सयानी।
काजल लगाऊँगी, टीका लगाऊँगी,
गोरे-गोरे हाथों में मेहंदी लगाऊँगी,
गुड़िया मेरी रानी, गुड़िया मेरी रानी।

रितु कुमारी
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-01, सत्र : 2020-22

शिक्षक

अपने बच्चों की शान,
पुस्तकों का ज्ञान,
सबके हृदय की जान
ऐसे होते हैं शिक्षक महान्
बढते रहें बच्चे इनके
बस इसी में इनका मान
माटी सञजन कर मूरत बनाते हैं
फिर भी नहीं जरा अभिमान
हर भटकते मोड़ पर
बनते हैं ये पथ प्रदर्शक
अपने सहज सुशील गुणों से
है ये सभ्यता, संस्कृति के रक्षक
सहनशीलता साकारात्मकता
यही इनकी पूँजी है
इसी रास्ते चल-चल-कर
थमाते सबको सफलता की कुँजी है।
इनके ज्ञान के रास्ते ही
रच जाता इतिहास है।
अलग है सबसे इनकी पहचान
सृष्टि भी इसकी गवाह है।

नीशि सिंह
वर्ग-बी॰एड॰
रौल नं॰-46, सत्र : 2020-22

बेटी

बेटी को चाँद जैसा मत
बनाओ कि हर कोई घूर के देखे बेटी को
सूरज जैसा बनाओ ताकि
घूरने से पहले सबकी नजर झुक जाये।
बात -बात पर गुस्सा करने
वाले लोग वही हाते हैं
जिन्हें हमेशा खुद से ज्यादा
किसी और की फिक्र रहती है।

आरती कुमारी
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-82, सत्र : 2020-22

मेहनत रंग लाई

नहीं बनाया किसी ने टाटा, बिरला, अंबानी,
खुद ही बने हैं सब अपने सपनों के सौदागर।
राह नहीं थी बनी बनाई, ना ही है कोई बड़ा ज्ञानी,
सब ने की है कड़ी मेहनत, फिर है मेहनत रंग लाई।
एक पल में नहीं बनता सबकुछ,
पल-पल मेहनत करके, सब ने मंजिल पाई है।
कल क्या होगा ना ध्यान दिया, बस काम किया,
राह में मुश्किल उनकी भी आई।
मुस्किल था मंजिल को पाना, बना दिया रास्ता,
चल दिए बिना किए किसी की परवाह।
सुना है उन्होंने भी ताना बाना,
लेकिन फितुर चढा था कुछ पाने का।
तोड़ दिया सबका भ्रम, कर दिया सपनों को साकार,
ताना देने वाले ने भी हँसकर सत्कार किया।

सुभाशिनी रंजन
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
सत्र-2020-22

हम हैं भारतीय नौजवान

हम हैं भारतीय नौजवान
प्रेम हमारा निशान
संघर्ष हमारा परिचय
रंग रूप भेद-भाव
है ना कही
हम हैं एक परिवार
ला ला ला ला।
अच्छे कर्मो से अपना मान बढ़ायेंगे
खुद को बदलकर नया समाज बनायेंगे।
प्रेम दया और शांति का दर्पण
बनकर हम दिखायेंगें।
गाँव-गाँव और शहर-शहर में
नई जागृति लायेंगे।
हम हैं भारतीय नौजवान
ला ला ला ला।

आरती कुमारी
वर्ग-डी0एल0एड0
रौल नं0-82
सत्र-2020-22

तिरंगा

तीन रंगों से बना तिरंगा,
सदा शक्ति बरसाता है।
देखा भारत की चोटी पर,
शान से लहराता है।।
केसरिया रंग को देखो,
जो त्याग हमें सिखलाता है।
जब भी कोई संकट आए,
मर मिटना हमें बताता है।
सदा जीवन उच्च विचार,
सफेद रंग बतलाता है।
सत्य अहिंसा भाईचारों ,
का पाठ हमें सिखलाता है।
हरे रंग की अपनी कहानी ,
मन को हर्षित कर जाती है।
हरी-भरी प्रकृति को देखो,
सबके मन को भती है।
बीच में देखो अशोक चक्र को,
जो हरदम चलते रहता है,
रूको नहीं तुम आगे बढो,
हर-पल हमसे कहता है।

पुनीता कुमारी
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-45, सत्र-2020-22

जीवन में एक गुरु तो होना चाहिए

गुरू का स्थान जीवन में होना चाहिए,
जीवन में एक गुरू तो होना चाहिए
गुरू देता है जीने का ज्ञान,
गुरू देता है अच्छे संस्कार।
गुरू सिखाता है कठिनाईयों का सामना करना,
गुरू सिखाता है डटकर लड़ना।
गुरू की कड़वाहट में भी मिठास होती है,
गुरू में शिष्य को आगे लाने की आस होती है।
गुरू दिखाता है अंधकार में उजियारा,
गुरू से बनता है जीवन सारा।
गुरू ना जाने उच्च-नीच का भेद,
गुरू के नजर में सब जैसे एक।
गुरू कराता है वास्तविकता से मुलाकात,
गुरू देता है सामर्थ्यता की सौगात।
गुरू भटके को राह दिखाता है,
गुरू गिरते को संभालता हैं
गुरू मन का मैल मिटाता,
गुरू सबसे मेल कराता।
गुरू के मिलन से धन्यता मिलती है,
गुरू के होने से सफलता मिलती है।
गुरू का स्थान जीवन में होना चहिए,
जीवन में एक गुरू तो होना चाहिए।

सीमा कुमारी
वर्ग-बी॰एड॰
रौल नं॰-06, सत्र-2020-22

रफ कॉपी

जब हम पढते हैं तो हर विषय की कॉपी अलग होती है,
लेकिन एक ऐसी कॉपी होती है जो हर विषय को
संभलती है।
उसे हम कहते हैं रफ कॉपी।
यूँ तो रफ कॉपी का मतलब खुरदुरा होती है,
लेकिन ये हमारे लिए बहुत मुलायम होती है।
उसे कहते हैं रफ कॉपी।
शानदार राइटिंग में लिखा हुआ पहला पेज होता है,
पहले पन्ने पर डिजाइन में लिखा हुआ हमारा नाम होता
उसे हम कहते हैं रफ कॉपी।
बीच में लिखते हिन्दी और अंग्रेजी है पर
लगता है जैसे कई भाषाओं का मिश्रण है।
अपना लिखा हुआ खुद नहीं समझ पाते हैं।
सोचती हूँ जब चार दिन बचेंगे
जिंदगी के तब खोलूँगी वो रफ कॉपी।
देखूँगी च मे में छिपे आँखों से पलटुँगी,
कपकपाती हाथों से, पढूँगी थर-थराती होठों से।
उसे हम कहते हैं रफ कॉपी।

सीमा कुमारी
वर्ग-बी॰एड॰
रौल नं॰-06, सत्र-2020-22

वो थे मेरे पापा

जब पहली बार आँख खुली तो
आस-पास सबको देखा,
माँ रो रही थी भाई की आँखें नम थी,
पर कोई दूर खड़ा अस्पताल के बिल भरता था,
वो थे मेरे पापा.....।
वो माँ ही नहीं थी सिर्फ जो अपनी
रातों को काली करती थी,
मेरी तबियत खराब होने पर ।
जहां मैं माँ के गोद में रो रही थी,
वही वो पापा थे जो जल्दी से मेरे लिए
दूध तैयार कर रहे थे ।
ये तब की बात है,जब मैं बोल भी नहीं पाती थी,
पर वो पापा ही थे जो मेरे हर
इशारे को बखूबी समझ लेते थे ।
इ ारे ही नहीं मेरे हर फरमाईश को पूरा कर देते थे,
इतना लाड़ करते थे मुझपर।
खुद के बचपन में कमी नहीं देखा दिवाली पर
नये कपड़े मिलना कैसा होता है,
उस अधुरी ख्वाइश को अपने बच्चों पे ना गुजरने
दिया।
हर शाम को टक-टकी लगाए किवाड़ की आड़ में
झांकती रहती थी कि कब पापा आयेंगे।
चॉकलेट, टॉफी काल्डड्रिंक, दिलायेंगे।
सर्दी-गर्मी में खुद के कमरे की छत पर पंखा हर
रोज चलते-चलते रूक जाता था,
लेकिन मुझे ए॰सी॰ की ठंडी हवा में सुलाते थे।
वो थे मेरे पापा.....।

कामिनी कुमारी
वर्ग-बी॰एड॰
रौल नं॰-47, सत्र : 2020-22

माँ की ममता

माँ की ममता जिसमें सागर बहती है,
चेहरे की झलक देख उसका चेहरा फूलों-सा खिलता है।
नौ माह गर्भ में रखकर जो दुःख वो सहती है,
फिर भी चेहरे पर मुस्कान रखती है।
हाँ माँ की ममता ऐसी होती है।
जब आँख खुली तो माँ की गोद ही सहारा है,
नन्हा सा आँचल उसका मुझको धरातल से भी प्यारा है,
एक पुकार पर मेरी माँ जो दौड़ी चली आती है,
अगर मैं रूठूँ तो जल्द मुझे मनाती है,
हाँ माँ की ममता ऐसी होती है।
भूख लग जाए तो माँ तड़प जाती है,
खुद भूखी रहकर भी वो हमें खिलाती है,
सर पे थपकियाँ लगा कर लोरी हमें सुनाती है,
सूखा विस्तर देकर हमको खुद गिले पर सो जाती है,
हाँ माँ की ममता ऐसी होती है।
पकड़-कर उंगली को चलना सिखाती है,
गुरू बन पढना-लिखना सिखाती है,
सारे प्रश्नों का वो जवाब बन जाती है,
हाँ माँ की ममता ऐसी होती है।
माँ मेरी अब मुझे छोड़ चली गई,
खुशियाँ मेरी तुम बिन अधुरी रह गई,
बयाँ नहीं हो पाती माँ की ममता हमसे,
लिखूँ माँ के लिए जितना शब्द कम पड़ जाते हैं,
हाँ माँ की ममता ऐसी होती है।
आपके इंतजार में खामोश रहती हूँ मैं,
प्यार अब आपका मुझे नहीं मिल पायेगा,
ये सोच-सोच कर रोती हूँ माँ
दुनियाँ की सबसे अच्छी माँ,
हाँ माँ की ममता ऐसी होती है।

मिस संजना
वर्ग-बी॰एड॰
रौल नं॰-87, सत्र-2020-22

पर्यावरण

इंसान की सारी माया
पर्यावरण पर संकट लाया,
देश को विकसित बनाया,
पर्यावरण को खूब सताया।
पेड़-पौधे न ट हो गए,
पेड़ काट इंसान मस्त हो गए,
अपने स्वार्थ को दिया बढावा,
पर्यावरण को खूब सताया।
पंछी सारे लुप्त हो गए,
इंसान सारे सुस्त हो गए,
इमारतें तो बहुत बनाया,
पर्यावरण को खूब सताया।
प्रदूषण को इतना बढाया,
पर्यावरण प्रदूषण की चपेट में आया,
इंसान को फिर भी समझ ना आया,
पर्यावरण को खूब सताया।
पर्यावरण की दुहाई,
सुन लो पेड़ काटने वाले कसाई,
पेड़ लगाओ, देश बचाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

माया कुमारी
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-02, सत्र-2020-22

राह में मुश्किल होगी हजार

राह में मुश्किल होगी हजार,
तुम दो कदम बढाओ तो सही,
हो जाएगा कर सपना साकार,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
मुकिल है पर इतना भी नहीं,
कि तू कर ना सके ,
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं,
कि तू पा ना सके ,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा,
तुम्हारा भी सत्कार होगा,
तुम कुछ लिखो तो सही,
तुम कुछ आगे पढो तो सही,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे,
तुम एक राह चुनो तो सही,
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे,
जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे,
गिरते पड़ते संभल जाओगे।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

सुनीता कुमारी
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-15, सत्र : 2020-22

नारी हूँ मैं

नारी हूँ मैं,
हर देश में हूँ मैं,
हर वेश-भूषा में हूँ मैं,
विभिन्न नामों से जानी जाती हूँ मैं,
नारी हूँ, मैं।
कभी बेटी,कभी बहन, कभी पत्नी, कभी माँ,
कभी शिक्षिका बन अनेकों भूमिकाएँ निभाती हूँ,मैं,
कभी सावित्री बाई फूले बन
नारी शिक्षा की लौ जलाती हूँ, मैं,
कभी मदर टेरेसा बन मानवता की पाठ पढाती हूँ, मैं,
कभी एनीबेसेंट बन संपूर्ण जीवन
मानवोत्कर्ष पर होम कर जाती हूँ, मैं,
कभी मैडम क्यूरी बन रेडियो
एक्टिविटी की खोज करती हूँ,मैं,
कभी महादेवी वर्मा बन वृहद्
साहित्य सृजन करती हूँ, मैं,
कभी कल्पना चावला बन
अंतरिक्ष भ्रमण कर आती हूँ, मैं,
कभी लता मंगे कर बन संगीत का
मनोरम तान सुनाती हूँ, मैं,
कभी बछेन्द्री पाल बन पर्वतारोही कहलाती हूँ, मैं,
कभी किरन बेदी बन सेना की कमान संभालती हूँ, मैं,
कभी राष्ट्रपति बन देश के
सर्वोच्च सिंहासन संभालती हूँ, मैं,
कभी राजनेत्री बन राजनीति का पाठ पढ़ाती हूँ मैं,
कभी अभिनेत्री बन अभिनय का लोहा मनवाती हूँ, मै,
कभी पायलट बन अंतरिक्ष में वायुयान उड़ाती हूँ, मैं,
कभी खेल का मैदान हो या
जंग के शत्रु को सर्वत्र धूल चटाती हूँ, मैं,
कभी प्रकृति की अनुपम उपहार हूँ, मैं,
सर्वस्व न्योछावर करके भी मुस्कुराती हूँ, मैं,
सभी दर्दो को सह दोनों कुलों की
मर्यादा का ख्याल रखती हूँ, मैं,
विस्तृत भूखंड की जन्मदात्री हूँ, मैं,।
नारी हूँ, मैं,।।

ज्योति कुमारी
वर्ग-बी॰एड॰
रौल नं॰-39, सत्र-2019-21

भारत के गाँव

सभी सरल-सरस, सब शांत-शांत,
यह है भारत का ग्राम्य प्रांत,
मानुष सबके सब हैं सुकांत,
जन प्रेमपूर्ण हैं नखशिखांत।
मन में सबके हैं भगवान,
हैं जन दीन-हीन,
पर है, ईमान,
मन है ज्यों इनके पुराण।
तन में हुलास,
मन में है आश,
सब तरफ भले अंधेरा हो,
मन है पर ज्योतित प्रकाश।
कहीं, बरगद कही पर है पलाश,
नहीं हरियाली की है तलाश,
बंधे- बंधन में है पास-पास,
नहीं भेद-भाव है बात खास।।

पूजा श्री
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-135, सत्र : 2020-22

नारी

अनिमेष, अपलक, पुलकित,
विह्वल चक्षु है लक्षित,
और, उसमें है अश्रु-अमृत,
भौंहों की काली रेखा तनित।
उर भी है वात्सल्य पूरित,
मन ममता है सर्वविदित,
ईहा एक है प्रफुल्लित,
तेरे समक्ष हैं सर्वनमित।
अलि, वह है वसुधा,
या है वह पीयूष-सरित,
पल में है चारु तडित,
सत त्रिदशा है उसपे वारित।
मन में प्रमोद है दंभरहित,
अंधेरों पर है मुस्कान पलित,
मुखरित है मुख, उर स्मित,
अतुल सौगात है सौहार्द अमित।

पूजा श्री
वर्ग-डी॰एल॰एड॰
रौल नं॰-135, सत्र : 2020-22

पुस्तकालय

इससे बेहतर कोई स्थान नहीं।
ज्ञान की जहाँ कोई कमी नहीं।
यह है पुस्तकों का आलय।
जिसको कहते हैं हम पुस्तकालय।।
जानकारी यहाँ पूरी समाई।
पुस्तकों की ना कोई कमी।।
ज्ञान से है यह पूरा भरा।
पढ़ने का यहां सबकुछ पड़ा।।
अलग-अलग पुस्तकें होती।
कोई नया ज्ञान है बतलाती।।
तो कोई मनोरंजन भी करती।
किताबों की दुनिया यह कहलाती।।
बच्चों के लिए काव्य कहानियाँ।
अपने लिए ज्ञान यहाँ समाया।।
पुस्तकों का यह संग्रहण।
ज्ञान करो यहां पूरा ग्रहण।।
लेखकों का विचार है यहां।
ज्ञानियों का ज्ञान है यहां।।
कुछ हो चुकी पुरानी।
तो कुछ ताजी किताबें हैं यहां।।
किसी मंदिर से कम नहीं है ये।
किसी घर से छोटा नहीं है।।
कम मत आंकना इसके मूल्यों को ।
कीमत इसकी दौलत से कम नहीं है।।
इससे बेहतर कोई स्थान नहीं।
ज्ञान की जहां कोई कमी नहीं।।
यह है पुस्तकों का आलय ।
जिसको कहते हैं हम पुस्तकालय।।

नीलम कुमारी
पुस्तकालयाध्यक्षा
टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, हरिगाँव

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा हम उसे कहते है जिसमें कन्या के परिवार ने विदाई के समय दहेज के रूप में उपहार देते हैं। दहेज में कन्या के माता–पिता कीमती चीजें देते हैं। यह काफी हद तक समाज द्वारा निंदा की जाती है कि इसका अपना महत्त्व है। और लोग अभी भी इसका अनुसरण कर रहे हैं। तथा दुल्हन को कई तरीकों से लाभ पहुँचा रही है। कुछ लोग इन दिनों स्वतंत्र रूप से रहना पसंद करते है, और उनको दहेज में मिली ज्यादातर नकदी सामान जैसे कार और अन्य ऐसी संपतियाँ शामिल है। जो उनके लिए वित्तीय सहायता के रूप में कार्य करती है। और उन्हे अपना नया जीवन शुरू करने में मदद करती हैं। शादी के बाद कन्या अपने कैरियर के लिए सोचती है, और वर अपना कैरियर शुरू करते हैं।

वे दोनों आर्थिक रूप से इतने अच्छे नहीं होते कि वे इतने ज्यादा खर्चों को एक बार में वहन कर सकें। फिर भी दुल्हन के परिवार वाले पूरा बोझ लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। इतनी बड़ी–बड़ी कीमती चीजें लेकर भी दूल्हे के घर वाले खुश नहीं रहते हैं। और कन्या के साथ अभद्र व्यवहार करने लगते हैं। लड़कियों को इतना कष्ट उठाना पड़ता है। ससुराल वालों की मांग को पूरा करने के लिए। प्रताड़ित भी करते हैं। दहेज के लालच में ही कितने सारे लोग लड़कियों को जला कर मार डालते हैं। इतने सारे अत्याचार सहते–सहते कन्याओं को आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाती है।

कई लोग यह भी तर्क देते हैं कि जो लड़कियाँ देखने में अच्छी नहीं होती, वे दूल्हे की वित्तीय मांगों को पूरा करके शादी कर लेती है। सबसे दुर्भाग्य है कि लड़कियों को बोझ के रूप में देखा जाता हैं जैसे ही वह बीस के उम्र को पार कर लेती है उनके माता–पिता की सोच यही रहती है कि वे उनकी शादी कर दें। यह एक ऐसा मामला है जिसमें लोगों को दहेज देना उनलोगों के लिए के लिए वरदान जैसा होती है। लोगों को अब इस सोच को बदलना चाहिए। दहेज प्रथा के द्वारा यह भी माना जाता है कि दुल्हन और उनके परिवार की भारी मात्रा में उपहार उपलब्ध कराने की स्थिति में समाज में उनके परिवार की इज्जत बढ जाती है। हालांकि अब ऐसी स्थिति है कि ज्यादातर मामलों में इसने लड़कियों के खिलाफ काम किया है।

दहेज प्रथा जो लड़कियों को आर्थिक रूप से मदद करने के लिए एक सभ्य प्रक्रिया के रूप में शुरू की गई, क्योकि वे नये सिरे से अपना काम जीवन शुरू करती है और धीरे –धीरे समाज की सबसे बुरी प्रथा बन गई है। दहेज को एक दंडनीय अपराध घोषित करने के बाद और कई अभियानों के माध्यम से इस प्रथा के असर के बारे में जागरूकता फैलाने के बाद भी लोग इसका पालन क्यों कर रहें। यहाँ लोग परंपरा के नाम पर नजर अंदाज करने की हिम्मत नहीं कर पाते। लोग इस परंपरा को अंधाधुंध पालन कर रहे हैं। हालांकि यह अधिकांष मामलों में दुल्हन के परिवार के लिए बोझ साबित हुई है।

दहेज प्रथा के अधिवक्ता इसका समर्थन कर सकते हैं लेकिन तथ्य है कि यह पूरी तरह से समाज को अधिक नुकसान पहूँचाता हैं।

अंशु कुमारी
वर्ग–बी॰एड॰
रौल नं॰–94, सत्र : 2020–22

सीखने के स्तंभ

सीखना एक व्यापक शब्द है। यह जन्मजात प्रतिक्रियाओं पर आधारित है। व्यक्ति अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर जो क्रिया करता है उसके फलस्वरूप वह किसी नवीन परिस्थिति के संपर्क में आता है। जब वह अपने पुराने अनुभवों के आधार पर इस नवीन परिस्थिति द्वारा अपनी प्रवृत्तियों को संतुष्ट नहीं कर पाता है तो वह इस स्थिति के साथ समायोजन करने का प्रयत्न करता है। परिणामतः वह अपने उन व्यवहारों को छोड़ देता है जो उक्त परिस्थिति के अनुकूल नहीं होते हैं और नवीन परिस्थिति के अनुकूल व्यवहारों को अपनाने लगता है। इस प्रकार उसके व्यवहार अनुभवों के आधार पर परिवर्तित और परिमार्जित होते रहते हैं। इस प्रकार के स्वभाविक व्यवहार में होने वाले प्रगतिशील परिवर्तन या परिमार्जन को ही सीखना कहते हैं।

जैसा कि प्रेसी–महोदय ने भी कहा है– **"सीखना उस अनुभव को कहते हैं जिसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन या समायोजन होता है और जिसके व्यवहार की नयी दिशाएँ प्राप्त होती है।"**

सीखन एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलती रहती है। सीखने के कुछ मानक व कुछ तरीके होते हैं जिसे जानना अति आवश्यक है। सीखने की क्रिया में हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में भाग लेता है इसे जानने के लिए सीखने के स्तंभ को जानना अतिआवश्यक है।

सीखने के स्तंभ को मुख्यतः चार भागों में बांटा गया है जिन्हें हम निम्न प्रकार से वर्णित कर सकते हैं–

1. **सीखने के लिए सीखाना** :– इस स्तंभ के तहत हम सीखने के कौशल सीखते है कौशल के तहत किसी विषय में पारंगति को प्राप्त करना है। हमारा सीखने का तरीका क्या है और हम सीखने को किस स्टाइल से सीख रहे है। सीखने के प्रति नजरिया या अभिवृत्ति भी इस स्तंभ के तहत आती है।
2. **करने के लिए सीखाना** :– इस स्तंभ के तहत हम सीखने के कौशलों का प्रदर्शन करते हैं अर्थात् तो हमने किसी भी विषय को सीखने में कौशल प्राप्त किया है। उनका हम प्रदर्शन किस प्रकार करते हैं यह सीखते हैं।
3. **साथ रहने की भावना के लिए सीखाना** :– इस स्तंभ के तहत हमें यह सीखन होता है कि हम किसी के साथ किस प्रकार रह सकते है। उसके लिए आवश्यक है कि हमें अपने अंदर ऐसे कौशलों का विकास करना होगा जो विविधता एवं विभिन्नताओं का सम्मान करें। हमें दूसरे से कुछ सीखने के लिए उन्हें बर्दाश्त भी करना पडेगा क्योंकि हमें उससे कुछ सीखना है। यह तभी संभव है जब हम अंतर वैयक्तिक कौशल का विकास अपने अंदर कर लें।
4. **होने के लिए सीखाना** :– इस स्तंभ के तहत व्यक्ति सफल होने की चाह (इच्छा) रखता है वह अपने आप को बेहतर से बेहतर साबित करना चाहता है। हमें इस भावना को सीखन होगा। बहुत से व्यक्ति ऐसे भी होते हैं कि वह किसी भी कार्य को जो उन्हें अच्छा लगता है भले ही उससे उनका नुकसान हो जाये वो करते हैं या सीखते हैं इसे हम आत्म सिद्धि के लिए सीखना कहते हैं।

उपर्युक्त चार स्तंभों से सीखना होता है जो कि सीखने को बेहतर बनाता है।

रामू प्रसाद
सहायक प्राध्यापक
(टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, हरिगाँव)

मन जब कर रहा हो बहुत तंग करिये "योग"

"भ्रामरी प्राणयाम"

भ्रामरी प्राणायाम मन को एकाग्र व शांत करने का अनुठा तरीका है। दोनों हाथें के अंगूठे से कान बंद करें, आँख के उपर उंगली रखें तथा गहरी सांस लेकर होठ बंद करके गुंजन करें।

खुले में बैठकर इस तरह गुंजन करना मन को शांत कर देता है, बस इसके तुरंत बाद तुरंत आँख न खोलें, कुछ देर आँखे बंद किए बैठे रहें,तन और मन में क्या हो रहा है, यह महसूस करें,इससे आप अपने भीतर बढ़ते मौन और भाांति का अनुभव करेंगे।

आप हम्मम, मम्म ,ओम आदि किसी भी ध्वनि का अभ्यास कर सकते हैं।

कमलेश कुमार (स॰ प्रा॰)
शारीरिक शिक्षा
एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, हरिगाँव

जीवन की सीख

होड़ मत करो, अपनी मंजिल खुद बनाओ

एक बार स्वामी विवेकानन्द के आश्रम में एक व्यक्ति आया जो बहुत दुःखी लग रहा था। वह व्यक्ति आते ही स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा और बोला कि महराज मैं अपने जीवन से बहुत दुःखी हूँ। मैं बहुत मेहनत करता हूँ। काफी लगन से भी काम करता हूँ, लेकिन सफल नहीं हो पाता।

भगवान् ने मुझे ऐसा नसीब क्यों दिया है कि मैं पढ़ा–लिखा और मेहनती होते हुए भी कभी कामयाब नहीं हो पाया हूँ। धनवान नहीं हो पाया हूँ। स्वामी जी उस व्यक्ति की परेशानी को पल भर में ही समझ गये। उन दिनों स्वामी जी के पास एक छोटा सा पालतू कुत्ता था। उन्होंने उस व्यक्ति से कहा तुम कुछ दूर जरा मेरे कुत्ते को सैर करा लाओ, फिर मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। आदमी कुत्ते को लेकर कुछ दूर निकल पड़ा। काफी देर तक सैर करा कर जब वो व्यक्ति वापस स्वामी जी के पास पहुँचा तो स्वामी जी ने देखा कि उस व्यक्ति का चेहरा अभी भी चमक रहा था जवकि कुत्ता हांफ रहा था और बहुत थका हुआ लग रहा था। स्वामी जी ने व्यक्ति से कहा कि ये कुत्ता इतना ज्यादा कैसे थक गया जबकि तुम तो बिना थके दिख रहे हो, तो व्यक्ति ने कहा कि मैं तो सीधा–सीधा अपने रास्ते पर चल रहा था लेकिन ये कुत्ता गली के सारे कुत्तों के पीछे भाग रहा था और लड़ कर फिर मेरे पास वापस आ जाता था। हम दोनों ने एक समान रास्ता तय किया है। लेकिन फिर भी इस कुत्ते ने मेरे से कहीं ज्यादा दौड़ लगायी है, इसलिए ये थक गया है। स्वामी जी ने मुस्कुरा कर कहा – यही तुम्हारे सभी प्रश्नों का जवाब है। तुम्हारी मंजिल पे जाने की बजाय दूसरे लोगों के पीछे भागते रहते हो। और अपनी मंजिल से दूर होते चले जाते हो। यही बात हमारे दैनिक जीवन पर भी लागू होती है। हमलोग हमेशा दूसरों के पीछे भागते रहते है,कि वो डॉक्टर है तो मुझे भी डॉक्टर बनना है। वो ज्यादा पैसा कमा रहा है तो मुझे भी कमाना है। बस इसी सोच की वजह से हम अपना लक्ष्य को कहीं खो बैठते हैं। इसलिए **दूसरों की होड़ मत करो, अपनी मंजिल खुद बनाओ।**

हरेन्द्र यादव
वर्ग–बी॰एड॰
रौल नं॰–14, सत्र : 2020–22

(सीख) थॉमस अल्वा एडिसन

थॉमस अल्वा एडिसन ने बल्ब का आविश्कार एक बार में नहीं 1000 बार विफल होने के बाद किया था।

इतनी बार विफल होने से एक साधारण व्यक्ति बिखर जाता है या नाकारात्मकता में डूब जाता है। मगर एडिसन सदैव सकारात्मक विचारों से लैस रहे। दरअसल विपरीत परिस्थितियां हमारा अवलोकन करने के उद्दे य से आती है। हमारी आंतरिक भाक्ति को परखने का कार्य करती है, मगर इंसान यह भूल जाता है कि जैसेकोयला धरती की गहराई ताप व दबाव सहकर ही हीरा बनता है। चंदन घिसने के बाद ही सुगंध देता है।

उसी प्रकार एक इंसान साधारण से असाधारण तभी बनता है जब वह विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक विचार रखते हुए आगे बढ़ते चला जाता है।

हरेन्द्र यादव
वर्ग–बी॰एड॰
रौल नं॰14, सत्र : 2020–22

सबमें विराजते विवेकानन्द

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में युवावस्था का विषेश महत्त्व होता है। यह एक ऐसी अवस्था होती है, जिसमें जिन्दगी संवारने के साथ–साथ बिगड़ने की भी संभावना रहती है। यदि युवा स्वयं को पहचान ले तो निश्चित ही वे मन माफिक सफलता हासिल कर सकते हैं।

युवावस्था! मतलब एक ऐसी अवस्था जो इंसान के लिए सपने बुनने और उसे आकार देने की होती है। जो लोग इस अवस्था में संभल जाते हैं, वे उल्लेखनिय सफलता प्राप्त करते हैं। जो फिसल जाते हैं वे अपने साथ–साथ दूसरों के लिए भी घातक साबित होते हैं।

बरहाल आज के युवाओं के बारे में जब मैं कुछ लिखने बैठा हूँ तो उनके अनेक रूपों में से दो रूप मुझे कुछ कहने के लिए उत्प्रेरित कर रहें हैं। पहला वह रूप जो उनके प्रति श्रद्धा–आस्था व तोष का भाव जगा रहा हैं जबकि दूसरा उनके प्रति अविश्वास–अफसोस व असंतोष का भाव भर रहा है। गदहपचीसी कही जाने वाली अवस्था। मस्ती व नासमझी से भरपूर कही जाने वाली अवस्था। इसमें जो युवा संभल गए उनपर परिवार समाज का गौरव बोध होता है। जो फिसल गए, जो भटक व बहक गए, उनको देख ग्लानि का भाव पैदा होता है। ऐसा नहीं है कि बनने वाले युवा के भीतर ही ऊर्जा भाक्ति, वेग है और बिगड़ने वाले युवा के भीतर उसका सर्वथा अभाव है।

अंतर मात्र इतना है कि बनने वाले ने अपने भीतर की ऊर्जा को पहचान व परख लिया है। अपने विवेक को जागृत कर लिया है, उसे सही मार्ग दे दिया है। इसके विपरीत दूसरे का विवेक या तो सोया हुआ है या तो वह अपने अंदर की शक्ति के सक्षम स्त्रोत को पहचान नहीं पा रहा है, या फिर उसका वह गलत इस्तेमाल कर रहा है। अलबत्ता, दोनों प्रकार के युवा कुछ बनने की प्रक्रिया से गुजरते हुए नजर आ रहे हैं। हाँ, इनकी इस प्रक्रिया में गुण का अंतर, लक्ष्य–भिन्नता का अंतर जीवन जीने का ढंग का अंतर और अलग–अलग राह पर चलने का अंतर है। अपने को पहचान लेने और अपने को अपरिचित कर देने का अंतर है।

युवाओं से हर परिवार, हर समाज तथा हर राष्ट्र को यह सामान्य अपेक्षा रहती है कि उसको एक अच्छा सदस्य मिले, एक अच्छा नागरिक मिले, जो परिवार, समाज, देश को गति दे सके। प्रगति कर सके। जो स्वयं भटका हुआ है, खुद दूसरों पर बोझ बना हुआ है क्या वह अपनी प्रगति, परिवार, समाज वतन की प्रगति में सहायक सिद्ध हो सकता है?

आज के समय में यह घोर चिन्ता व पुरजोर चिंतन का विशय है। आमतौर पर युवावस्था में अधिकांश लागों में विवेक का अभाव होता है, भले–बुरे की की पहचान करने की नासमझी होती है, सही कर्त्तव्य–बोध की कमी होती हैं। अपने जन्मना संस्कार तथा सत् साहचर्य से किसी–किसी का विवेक जागृत अवस्था को प्राप्त हो जाता है तो किसी–किसी का बिल्कुल सुशुप्तावस्था में होता है। जब अपने अंदर की शक्ति को देखकर अपने भीतर के सर्वोतम को पहचानकर अपने विवेक जागृत कर भरी जवानी में एक युवा नरेन्द्र से 'विवेकानन्द' बन गया, विश्व मंच पर छा गया। अपने साथ–साथ अपनी मातृभूमि को गौरवान्वित कर गया। तब क्या आज के युवा ऐसा नहीं कर सकते?

हर नरेन्द्र (युवा) के अंदर एक विवेकानन्द छुपा हुआ है। सभी के अंदर राम–रावण, कृष्ण–कंस, बुद्ध–अंगुलिमाल का वास है। जरूरत है अपने विवेक को इनमें भेद करने की ऊर्ध्वोन्मुखी बनाने वाले को अपनाने की। अधोमुखी करने वाले को त्यागने की आज के युवा अगर इस नीर–क्षीर विवेक में सफल हो पाऐंगे कि क्या उनके लिए उचित है और क्या अनुचित, तो निश्चित रूप से उनके अंतः करण में विवेकानन्द दिखाई पड़ेंगे।

हरेन्द्र यादव
वर्ग–बी॰एड॰
रौल नं॰–14, सत्र : 2020–22

डॉ0 कलाम के अनमोल वचन

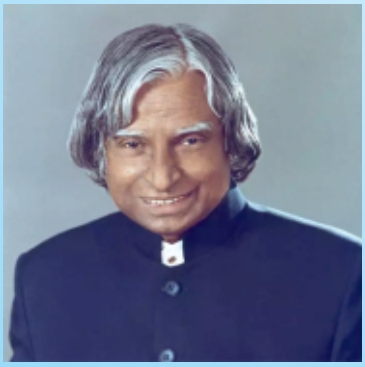

1. सपना वह पूरा नहीं होता जो हम सोचकर देखते हैं, वह पूरा होता है जो हमें सोने ना दे।
2. अगर सूर्य की तरह चमकना है तो सूर्य की तरह जलो।
3. इंतजार करने वालों को सिर्फ इतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
4. कृत्रिम सुख की बजाय ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये।
5. ब्लैक कलर भवानात्मक रूप से बुरा होता है, लेकिन ब्लैक बोर्ड विद्यार्थियों का जीवन ब्राइट कर देती है।
6. एक महान् शिक्षक ज्ञान, जुनून और करूणा से निर्मित होते है।
7. खुश रहने का बस एक ही मंत्र है, उम्मीद खुद से रखो किसी और से नहीं।

अनुपमा कुमारी
वर्ग–बी॰एड॰
रौल नं॰–36, सत्र : 2020–22

शिक्षा का व्यवसायीकरण

व्यवसायीकरण का सामान्य भाब्दों में अर्थ होता है किसी व्यवसायिक में प्रशिक्षण अर्थात् विद्यार्थी को कोई एक व्यवसाय सीखाना ताकि वह अपना जीवनयापन सुगमता से कर सके। विस्तार से यदि व्यवसायीकरण को देखें–समझें तो इसका अर्थ होता है–शिक्षा के साथ–साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ–साथ व्यवसाय में प्रशिक्षित करने से है।

व्यवसायीकरण के व्यापक स्वरूप को लेकर जो विचार प्रस्तुत किए हैं उनके अनुसार व्यवसायीकरण का अर्थ है, ''हम यह देखते हैं कि भविश्य की विद्यालयी शिक्षा का स्थान साधारण शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लाभप्रद संयोग में है, जिसमें पूर्व तकनीकी शिक्षा और व्यवसायीक शिक्षा के कुछ हिस्से शामिल हैं और परिणामस्वरूप सामान्य शिक्षा का तत्व आ जाता है। हम जिस प्रकार के समाज में रह रहे हैं उसमें इन दोनों प्रकार की शिक्षा को अलग–अलग करना अनुचित ही नहीं वरन् असंभव होगा।'' शिक्षा में व्यवसायिकरण का अर्थ उस शिक्षा से है जो विद्यार्थी को किसी व्यवसाय में निपुण व समर्थ बनाती है। परंतु माध्यमिक स्तर पर व्यवसायीकरण का अर्थ भिन्न–भिन्न लोगों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से लिया है। कुछ लोग इसे किसी व्यवसाय विशेष में प्रशिक्षण देने से लेते हैं। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य किसी विशेष पाठ्यक्रम के सुखान्त पर कोई काम शुरू करने के लिए किसी व्यापार कला, कौशल या किसी व्यवसाय आदि का सीखना है। परन्तु दूसरे समूह के लोग शिक्षा में व्यवसायीकरण का अर्थ व्यवसायिक प्रशिक्षण से समझते हैं। परन्तु यह दृष्टिकोण अति संकीर्ण तथा संकुचित है।

किसी राष्ट्र की तरक्की एवं खुशहाली उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। यही कारण है कि दुनिया के प्रत्येक राष्ट्र का प्रथम प्रयास होता है कि उसके देश की शिक्षा श्रेष्ठ हो। इस विचारधारा में भारत कोई अपवाद नहीं है। ऐसा नहीं है कि समुचित शिक्षा भारतीयों की केवल इच्छा मात्र है, अपितु इसे प्राप्त करने के लिए भरसक हर संभव प्रयास किए गए हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् तो ये प्रयास अति तीव्रगामी हो गए थे। जैसे ही देश स्वतंत्र हुआ था, भारतीय नेताओं तथा मनीशियों ने शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का भरपूर प्रयास किया। स्वतंत्रता से पहले भी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के प्रयास अंग्रेजी सरकार द्वारा किए गए थे, परन्तु वे केवल स्वार्थ के वशीभूत थे। अंग्रेजी सरकार शिक्षा के माध्यम से केवल सस्ते लिपिक तैयार करने तक सोचती थी। महात्मा गाँधी की आधारभूत शिक्षा प्रणाली शिक्षा के व्यवसायीकरण की ओर लक्ष्य करती थी। इसका मुख्य उद्देश्य उस शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना था जो शिल्प पर आधारित हो। इसलिए शिक्षा में बुनाई, सिलाई–कढ़ाई तथा कृषि आदि को सम्मिलित किया गया। सम्पूर्ण शिक्षा शिल्प पर केन्द्रित होती थी। इस प्रकार की शिक्षा विद्यार्थियों को शैक्षणिक ज्ञान के साथ–साथ जीवनयापन में सहायक होती थी। परन्तु ऐसे विद्यालयों में वास्तविक अधिगम अपेक्षाकृत कम होता गया। इसका परिणाम यह निकला कि मूलभूत शिक्षा अथवा महत्व खोती गई। यही कारण था कि आज के बदलते युग में शिक्षा के व्यवसायीकरण को नए तरीकों से सोचा गया।

आधुनिक शिक्षा पद्धति की अपनी अलग ही विशेषता है, पर दुर्भाग्य है कि यह केवल जीवन में आथिक निर्भरता प्रदान करने तक ही सिमट कर रह गई है। सामाजिक समृद्धि एवं प्रतिष्ठा का इसमें समावेश तो है पर इसका उपयोग कैसे किया जाये इसकी अनभिज्ञता है। वर्तमान शिक्षा प्रणली में समग्रता का पूर्णतया अभाव है। जिससे जीवन का समग्र विकास हो पर यह तभी संभव है जब हमें इसकी सही एवं स्पष्ट जानकारी हो। शिक्षा में एक अध्यापक की जिम्मेदारी बहुत ही मायने रखती है, छात्र अपने कर्त्तव्य के प्रति कितना सजग एवं सर्तक रहें ताकि उसका समग्र विकास हो सके। आज की शिक्षा एकांगी हो गई है इसका प्रमुख कारण है शिक्षा का व्यवसायीकरण। आज शिक्षा सिर्फ एक व्यवसाय बनकर रह गया है। शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास की व्याख्या करती है। यह विकास की परिभाशा को स्पष्ट करती है, इससे हमें जीवन को बेहतर ढंग से जीने की कला मिलती है। शिक्षा हमारे चहुमुखी विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।हमें आंतरिक जगत में चिंतन एवं चरित्र की सही समझ भी शिक्षा के द्वारा ही ज्ञात होती है वहीं बाहरी जगत में व्यवहारिकता एवं समाज के सामने स्वयं की एक उत्कृष्ट प्रस्तुति का सही ताल–मेल भी शिक्षा के द्वारा ही संभव है।

आज की शिक्षा में इन मूलभूत बातों का कोई महत्व नजर नहीं आता पुराने समय में शिक्षा ज्ञानदान की पुण्य परंपरा थी, जो कि आज महज पैसा एकत्र करने की योजना बन कर रह गई है। पहले योग्य आचार्य जो अपने अंदर ज्ञान की अनंत भडार संग्रहित किये रहते थे, वे विद्यार्थियों को समुचित शिक्षा प्रदान कर उनका मार्ग आलोकित करते थे। तब शिक्षा निःस्वार्थ शिक्षा थी जो ''सर्वजन हिताय'' को दर्शाती थी यही कारण था कि उन दिनों योग्य छात्रों की अधिकता थी या यूँ कहें तो जमावड़ा रहता था। यही विद्यार्थी आने वाले समय में अपने राष्ट्र एवं समाज को अपने मजबूत कंधों का सहारा देते थे। यही था हमारे स्वर्णिम भारत का रहस्य। पहले जहाँ शिक्षा उपहार स्वरूप था आज वहीं सिर्फ और सिर्फ व्यवसाय का स्त्रोत है। शिक्षा के कर्णधारों ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि आज शिक्षा विश्व बाजार में इतने बड़े व्यवसायिक प्रतिष्ठान के रूप में परिवर्तित हो जाएगी, सच में यह एक अद्भूत करिश्मा है। आज शिक्षा व्यवसाय में बेशुमार पैसा है। आज उच्च संस्थानों में पढ़ने के लिए जितना खर्च आता है उससे तो यही लगता है कि एक मध्यमवर्गीय परिवार शायद ही इस बारे में सोचे। इसका ज्यादा असर एक योग्य एवं प्रतिभावान छात्रों पर पड़ता है। वह चाहकर भी उन संस्थानों में दाखिले से वंचित रह जाता है और यही आज की शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दुष्परिणाम है। आज तो जिधर नजर उठा कर देखेंगे एक से बढ़कर एक शैक्षणिक प्रतिष्ठान नित जन्म ले रहे हैं जहाँ सिर्फ धनाढ्य वर्ग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं। वहाँ छात्रों की योग्यता का कोई विशेष मतलब नहीं होता, मतलब तो बस उसकी पारिवारिक संपन्नता से होती है। इन्हीं धन–पशुओं की बदौलत ऐसे संस्थान फल–फूल रहे हैं। संपन्नता एवं व्यवसायिकता की इस अंधी दौड़ में शिक्षा– रूपी व्यवसाय तो जरूर फल–फूल रहा है, पर शिक्षा का मूल उद्देश्य खत्म हो गया है। आज इन प्रतिष्ठानों में नैतिक मूल्य, चरित्र एवं व्यवहार का कोई मूल्य नहीं रह गया है। यह एक विडंबना ही है कि कल के भविष्य का वर्तमान इस रूप में देखने को मिल रहा है। अब समय आ गया है जब हमें हमारे छात्र–छात्राओं को व्यवसायिक तथा व्यवहारिक रूप से कुशल बनना होगा, ताकि वे औद्योगिक तथा तकनीकी उन्नति की योजनाओं में सार्थक योगदान देकर देश को आर्थिक रूप से सशक्त तथा खुशहाल बना सकें।

विजय कुमार झा
(सहायक–प्राध्यापक)
टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, 'हरिगाँव' आरा

''भारतीय रेलवे'' अतीत से वर्तमान तक

उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार 16 अप्रैल 1853 को भारत में पीली रेल गाड़ी मुम्बई से थाणे के मध्य 34 किमी के छोटे से रेलमार्ग पर चलाई गयी थीं किन्तु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रूड़की पुस्तकालय में उपलब्ध लंदन के 'स्मिथ एंड एंडरसन' प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक (1860) The Report on Ganga Canal के अनुसार गंगा नहर के निर्माण के लिए निर्माण सामग्री की ढुलाई हेतु रूड़की एवं पीरान कलियर के मध्य 22 सितम्बर 1951 से सितम्बर 1852 तक भारत में स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम के बाद अंग्रेज शासकों द्वारा राजनितिक सत्ता की स्थपना सामरिक और प्रशासनिक नियंत्रण हेतु और आर्थिक लाभ हेतु देश में रेल मार्गें के विकास का कार्यक्रम सक्रिय हुआ। 1925 ई0 में सरकार द्वारा रेल परिवहन का राष्ट्रीयकरण प्रारंभ हुआ। जो सन् 1950 में पूरा हुआ। सन् 1947–48 में विभाजन के पश्चात् भारत में रेल मार्ग की लम्बाई 54000 किलो मिटर थी। वर्ष 1949 में 9 सरकारी तथा 28 देशी राज्यों की रेल प्रणालियाँ थी। उसके बाद सन् 1951 में रेल को 6 क्षेत्रों में विभाजित किया गया।

लगभग 15.5 लाख श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने वाले भारत के इस विशालतम केन्द्रीय कर्मचारियों की कुल संख्या का 40 प्रतिशत कार्यरत है। भारतीय रेलवे के पास वर्तमान में 36000 करोड़ रूपयों की परिसंपतियाँ हैं। मार्च 2004 के अंत तक भारत के कुल रेल मार्ग का लगभग 28 प्रतिशत भाग का विद्युतीकरण किया जा चुका है। रेल यात्रियों के संबंध में 1950–1951 में इनकी संख्या 128.4 करोड़ थी जो 2003–04 में बढ़कर 511. 2 करोड़ हो गयी। 1950–51 में रेलवे ने 73. 2 लाख टन माल की ढुलाई की जो 2003–04 में बढकर 55. 74 करोड़ टन हो गया। इसी तरह रेलवे का संचालन अनुपात 1990–91 में 92 प्रतिशत था वह 2003–04 में 92.6 प्रतिशत हो गया।

भारत में रेलवे का विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तेजी से हो गया था जिसमे प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ रखने हेतु भारतीय रेलवे को 9 मंडलों में बाँटा गया था जिसकी संख्या बढ़कर अब 16 हो गई है। लगभग 63230 किमी लम्बे मार्ग, 6906 स्टेशनों, 7601 ईंजनों, 44756 सवारी डब्बे और 214760 माल ढोने वाले ढिब्बों से युक्त आज भारत का रेल परिवहन तंत्र एशिया में प्रथम एवं संसार का विशालतम रेल परिवहन तंत्र है।

भारतीय रेलवे 17 क्षेत्रों में बंटी हुई है। परंतु 27 जुलाई 2019 को दक्षिण तटीय रेलवे मंडल को जोड़ा गया है। इससे अब भारत में रेलवे मंडल की संख्या 17 से बढ़कर 18 हो गई है। प्रत्येक क्षेत्र में कई मंडल है। ये मंडल पूरे भारत में फैली हुईहै।

रेलवे जोन–जोन मुख्यालय

1.	मध्य रेलवे	मुम्बई टरमिनल	2.	उत्तर रेलवे	दिल्ली
3.	पूर्वोत्तर रेलवे	गोरखपुर	4.	पुर्वोत्तर सीमांत रेलवे	गुवहाटी
5.	पूर्व रेलवे	कोलकत्ता	6.	दक्षिण पूर्व रेलवे	कोलकत्ता
7.	दक्षिण मध्य रेलवे	सिकंदराबाद	8.	दक्षिण रेलवे	चेन्नई सेंट्रल
9.	पश्चिम रेलवे	मुम्बई (कृकृगेट)	10.	दक्षिण पि.चिम रेलवे	हुबली
11.	उत्तर पश्चिम रेलवे	जयपुर	12.	पश्चिम मध्य रेलवे	जबलपुर
13.	उत्तर मध्य रेलवे	इलाहाबाद	14.	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे	बिलासपुर
15.	पुर्व तटीय रेलवे	भुवनेश्वर	16.	पूर्व मध्य रेलवे	हाजीपुर
17.	मेट्रो रेल	पार्क स्ट्रीट कोलकत्ता	18.	दक्षिण तटीय रेलवे	विशाखापतनम

भारतीय रेलवे का विश्व में अपना एक अलग पहचान है। यह भारत का एक ऐसा उपक्रम है जिसमें भारत के अधिकांश जनसंख्या को रोजगार मिलता है एवं भारत में सर्वाधिक यात्री ढुलाई, माल ढुलाई भारतीय रेलवे से होता है।

अजित कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
एन॰एन॰टी॰टी॰सी॰, 'हरिगाँव'

निबंध

डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम

भारत की भूमि पर अनेक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति पैदा हुए हैं, जो एक निर्धन परिवार में पर्दा होने के बाद भी अपनी मेहनत, लगन और अपने कार्यों की वजह से आज भी उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, उन्हीं महापुरूषों में से एक है हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम जिनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 तामिलनाडु के रामेश्वरम में एक निर्धन परिवार में हुआ था। उन्हें अपी पढ़ाई के लिए पैसा कमाने हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता था। वे 1954 ई॰ में ग्रेजुएशन और 1960 ई0 में इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की।

डॉ॰ कलाम ने अनेक तरह से देश की सेवा की, उन्होंने अनेक प्रक्षेपास्त्रों के विकास के लिए कार्यक्रम किया। इनके बैलिस्टिक मिसाइल के विकास के लिए महान योगदान के कारण इन्हें **''भारत का मिसाइल मैन''** कहा जाता है। डॉ0 कलाम बहुत ही सादगी पूर्ण जीवन जीते थे, जब वह छात्र थे या इंजिनियर, वैज्ञानिक या राष्ट्रपति बने उनका जीवन एकदम सामान्य था।

डॉ॰ कलाम को अध्ययन से प्रेम था। वह शास्त्रीय संगीत और कविताएँ लिखना भी पसंद करते थे। उनका छात्रों से बहुत लगाव था, वह युवा वर्ग को ही देश की संपति मानते थे, इनको हमेशा प्रोत्साहित और प्रेरित करना चाहिए। इन्हें अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

डॉ0 कलाम का निधन 27 जुलाई 2015 में शिलांग में हो गया। हमलोग उनके देश के प्रगति के लिए जो किये गये कठिन परिश्रम और योगदानों को कभी नहीं भूल सकते हैं। उनका योगदान अतुलनीय है।

अनुपमा कुमारी
वर्ग–बी॰एड॰
रौल नं॰–36, सत्र : 2020–22

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

प्रस्तावना : किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा प्राण वायु है, तथा मूल्य उसकी आत्मा। मूल्यों का संबंध जीवन में प्रत्येक व्यवहार से होता है। अगर मूल्यों को हम जीवन कहें तो इसमें अतिश्योक्ति नहीं होगी मूल्यों का जन्म समाज से होता है। व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का विकास सामाजीकरण की प्रक्रिया के साथ–साथ चलता है। मूल्य का विकास सामाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान अनेक अतिरिक्त मूल्यों को ग्रहण कर लेता है, रेजमेंट के अनुसार ''समाज विहीन व्यक्ति एक कोरी कल्पना है'' अर्थात् जिस व्यक्ति को समाज से कोई लेना–देना या मतलब नहीं है, वह देवता हो या फिर पशु'' व्यक्ति स्वभाव से समाजिक प्राणी है। वह समाज के बिना ऐसे ही जीवित रहता है। जैसे पानी के बिना मछली जीवित रहती है इसलिए मानव को समाज से अलग नहीं किया जा सकता, जो एक दूसरे से अंतर्संबंधित होते है। सही अर्थों में देखा जाय तो मूल्य का सीधा संबंध विवेक से होता और व्यक्ति में इसी के द्वारा संचालित होता है। मूल्य की अवधारणा से तात्पर्य आदर्श, सिद्धांत और नैतिकता से है। सामाजिक संप्रेषण के द्वारा व्यक्ति का नैतिक विकास होता है। विवेक के आधार पर हम कुछ मूल्यों को अपनाते हैं तथा कुछ मूल्यों को छोड़ देते हैं। अपने स्वार्थी भावों के आधार पर मूल्यों का चयन करते हैं, और व्यवहार करते है। मूल्यों का महत्व इसी के अंदर दिया जाता है। मूल्य अभिवृतियाँ एवं आदर्श हमारे व्यवहार निर्देशित करती है।

भारतीय समाज में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता : मानव में मानवता जागरूक करने तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए मूल्य शिक्षा नितांत आवश्यकता है, क्योकि विना मूल्य ज्ञान के मानव पशु के समान है। मूल्यों की आवश्यकता व्यक्ति समाज, राष्ट्र तीनों को है। व्यक्ति का जीवन सामाजिक जीवन तथा राष्ट्रीय जीवन मूल्य पर आधारित है और मूल्य उन्हें नियंत्रित, निर्देशित करते हैं। वर्तमान भौतिकवादी परिवेश के कारण मानव की आवश्यकताओं में अत्यंत वृद्धि हुई है तथा जिसके कारण वह स्वार्थी एवं एकाकी हो रहा है। जिससे मानव मूल्यो का क्षरण हो रहा है। जिसके कारण मानव के मानवता का ह्रास हो रहा है और समस्याओं का जन्म हो रहा है, जिससे समाज में भ्रष्टाचार, कुसंगति, लक्ष्यविहीनता, क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद, आतंकवाद जैसी बुराईयां पनप रही हैं।

आज भारतीय समाज के लोगों द्वारा जैसे व्यवहार किया जा रहा है उससे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि नैतिक मूल्य विलुप्त होते जा रहे हैं, और समाज मूल्यहीन दिखाई पड़ रहा है, और अराजकता समाज को अपने आगोश में ले रहा है। व्यक्ति सम्प्रदायवाद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसे विवादों को बढ़ावा देकर राष्ट्रीयता के भावों को कुण्ठित कर रहा है। मूल्य–आधारित शिक्षा किसी भी समाज राष्ट्र की किसी भी प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है। इसलिए अध्यापकों को अपने व्यवहार से जन–सामान्य के जीवन में मूल्यों के सम्प्रेषण हेतु एक प्रेरक का कार्य करना चाहिए। इससे पहले अध्यापको को जीवन मूल्यों से युक्त होना अति आवश्यक है। आज के संदर्भ में यह औचित्य और बढ़ जाता है।

संत कबीर दास जी ने कहा–

''गुरू गोविन्द दाउ खड़े काके लागूँ पाँय, वलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।''

इसमें कबीर दास ने यह संदेश दिया है कि गुरू (शिक्षक) गुणवान (मूल्यों से मुक्त) है तो वह अपने शिष्य को ईश्वर की पहचान करा सकता है।

''गुरू कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गठि गठि काढै खोट, अन्दर हाथ सहारा दे उपर वारे चोट।''

अर्थात् एक गुणवान गुरू कुम्हार के समान है और शिष्य घड़े के समान है। जिस प्रकार कुम्हार अच्छे घड़े के निर्माण के लिए अंदर से हाथ का सहारा देकर उपर से बार–बार पिटता है और अतिरिक्त मिट्टी को निकाल देता है, उसी प्रकार गुणवान गुरू अपने शिष्यों में अच्छे जीवन मूल्यों का विकास कर लेता है और अनेक बुराईयों को निकाल देता है।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा के माध्यम से छात्र–छात्राओं को मूल्य की शिक्षा की जाय और यह आवश्यक रूप से सिखाया जाय कि शिक्षा प्राप्त करके ही वह व्यक्ति समाज में स्थान पा सकता है जो मूल्यों के प्रति आस्था तथा विश्वास कायम करे।

सन् 1950 में भारतीय संविधान का गणतंत्रीय रूप आया तो उसमें मूल्यों की चर्चा की गई, तथा मूल्यों का विकास करना आवश्यक बताया गया। सन् 1948–49 में डॉ0 राधा कृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया, उसमें भी मूल्यों को विकसित करने की अनुशंसा की गई। सन् 1959 में डॉ0 श्री प्रकाश की अध्यक्षता में मूल्य शिक्षा से संबंधित एक समिति का गठन हुआ जिसमें छात्र–छात्राओं के उचित आचरण के विकास को बल दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी इस बात पर गहरी चिंता प्रकट की गई थी कि ''जीवन के लिये आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन कि जरूरत है जिससे सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा सशक्त साधन बन सके।

विद्यालय स्तर पर ही बालक में ईमानदारी सत्यता सहनशीलता आदि विकसित किये जाएँ जो किसी की सहायता से व्यक्ति तथा समाज का संतुलन विकसित किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि विद्याथियों में मूल्यों का विकास करने के लिये प्रशिक्षण संस्थाओं में अच्छी शिक्षण अधिगम परिस्थितियों का विकास किया जाय।

निष्कर्ष : उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्य सम्प्रत्यय के अर्थ को समझना तथा उसके अनुसार व्यवहार करना अति आवश्यक है। मूल्यों के अभाव में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्यायेजन्म ले रही हैं। अगर मूल्यों का ह्रास इसी तरह होता रहा तो मानव के आस्तित्व को खतरा हो सकता है। इसलिए समय रहते मानव को सचेत हो जाना चाहिए तथा मानव मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन करना चाहिए। मानव मूल्यों को संरक्षित तथा संवर्धित करने के लिए मूल्यों के ज्ञान को आत्मसात् कर उसके अनुसार व्यवहार करके तथा दूसरों को व्यवहार करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। जिसमें मूल्य शिक्षा अपनी अहम् भूमिका निभा सकती है और मानव में मानवता का सृजन कर सकती है, क्योंकि मूल्य ही वह निधि है जो पशुत्व से देवत्व की ओर ले जाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शर्मा एस एस शर्मा (2011) ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'' साहित्य प्रकाशन, आगरा।
2. पाण्डेय आर (2000) ''मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य'' आर लाल बुक डिपों मेरठ।
3. शर्मा आर ए ''मानव मूल्य एवं शिक्षा'' आर लाल बुक डिपों मेरठ।
4. मैनी डी0 (2005) मानव मूल्य–''परक शब्दावली का विश्वकोष'' प्रकाशक प्रभात कुमार शर्मा, नई दिल्ली।
5. सक्सेना सरोज (2000) ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'' साहित्य प्रकाशन आगरा।

आर॰ के॰ विश्वकर्मा
(सहायक–प्राध्यापक)
टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, 'हरिगाँव' आरा

रामचरित की मनोवैज्ञानिकता

हिन्दी साहित्य का सर्वमान्य एवं सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य ''रामचरितमानस'' मानव संसार के साहित्य के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों एवं महाकाव्य में से एक है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य ग्रंथ के साथ रामचरित मानस को ही प्रतिष्ठित करना समीचीन है। वह वेद, उपनिषद, पुराण, बाईबल इत्यादि के मध्य भी पूरे गौरव के साथ खड़ा किया जा सकता है। इसलिए यहाँ पर तुलसीदास रचित महाकाव्य रामचरितमानस प्रशंसा में प्रसाद जी के शब्दों में इतना तो अवश्य कह सकते हैं कि –

''राम छोङकर और की जिसने कभी न आस की'', रामचरित मानस–कमल जय हो तुलसीदास की''

मानस को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो कुछ विशेष उल्लेखनीय बातें हमें इस रूप में देखने को मिलती है।

तुलसीदास एवं समय संवेदन में मनोवैज्ञानिकता : तुलसीदास जी ने अपने समय की धार्मिक स्थिति की जो आलोचना की है उसमें एक तो वे सामाजिक अनु ाासन को लेकर चिंतित दिखाई देते हैं। दूसरे उस समय की प्रचलित विभत्स साधनाओं से वे खिन्न रह रहे हैं। रामचरित मानस में उन्होंने इस प्रकार की धर्म साधनाओं का उल्लेख तामस धर्म के रूप में करते हुए उन्हें जीवन के लिए अमंगलकारी बताया है।

अभय चरहिं बन करहिं अनंदा,
सीतल सुरभी, पवन वट मंदा,
गुंजत अलि लै चलि – मकरंदा

इससे यह स्पष्ट हो जाता हो जाता है कि राम राज्य एक ऐसी मानवीय स्थिति का घोतक है जिसमें समष्टि और व्यष्टि दोनों सुखी है। निःसंदेह तुलसी के काल के लोकप्रियता का श्रेय बहुत अर्थों में उसकी अन्तर्वस्तु को है। अतः समग्रतया तुलसीदास रचित रामचरितमानस एक सफल विश्वव्यापी महाकाव्य रहा है। मनोवैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जाये तो रामचरितमानस का बड़े भाग "मानुस तन पावा" के आधार पर अधिष्ठित है, मानव के रूप में ईश्वर का अवतार प्रस्तुत करने के कारण मानवता की सर्वोच्चता का एक उद्‌गार है। वह कहीं भी संकीर्णतावादी स्थापनाओं से युक्त नहीं है। वह व्यक्ति से समाज तक प्रसारित समग्र जीवन में उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा भी करता है।

मानस के जीवन मूल्यों का मनोवैज्ञानिक पक्ष–

मनोवैज्ञानिक अध्ययन से 'रामराज्य' में स्पश्टतः तीन प्रकार हमें मिलते हैं।

1. मनः प्रसाद, 2. भौतिक समृद्धि, 3. वर्णाश्रम व्यवस्था।

तुलसीदास जी की दृष्टि में शासन का आदर्श भौतिक समृद्धि नहीं है। मन की प्रसन्नता उसका महत्वपूर्ण अंग है। अतः रामराज्य में मनुष्य ही नहीं पशु भी बैर–भाव से मुक्त है। सहज शत्रु हाथी और सिंह वहाँ एक साथ रहते है।

रहहिं एक संग गज पंचानन
(आधुनिकता के संदर्भ में रामराज्य)

रामचरित मानस में उन्होंने अपने समय में शासक या शासन पर सीधे कोई प्रहार नहीं किया। लेकिन सामान्य रूप से उन्होंने शासकों कोसा है। जिनके राज्य में प्रजा दुखी रहती है।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी

वर्णाश्रम व्यवस्था : तुलसीदास जी ने समाज के व्यवस्था–वर्णाश्रम के प्रश्न के सदैव मनोवैज्ञानिक परिणाम के परिपार्श्व में उठाया है। जिस कारण से कलियुग संतप्त है। और राम राज्य पापमुक्त हो वह है कलियुग में वर्णाश्रम की अवमानना और राम राज्य में उसका परिपालन। साथ–साथ तुलसीदास जी ने भक्ति और कर्म की बात भी निर्देशित किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भक्ति की महिमा का उद्‌घोष करने के साथ ही साथ शुभ कर्मों पर भी बल दिया है। उनकी मान्यता है कि संसार का कर्म प्रधान है। यहाँ जो कर्म करता है, वैसा फल पाता है–

करम प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करहि तो तसु फल चाखा।

कामहि नारि पिआरि जिमि
लोभहि के प्रिय दाम
तिमि रघुनाथ–निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।

इस प्रकार के प्रकृति वर्णन वर्षा का वर्णन करते समय पहाड़ों पर बूँदें गिरने का दृश्य संतों द्वारा स्वखलित वचनों को सेटे कहे जाने विदग्धा की चर्चा सादृष्य के ही सहारे हमें मिलता है। अतः तुलसीदास जी ने अपने काव्य की रचना केवल विदग्धन के लिए नहीं की है। बिना पढ़े–लिखे लोगों की अप्रशिक्षित काव्य रसिकता की तृप्ति की चिंता भी उन्हें ही थी जितनी विद्‌वत की ।

इस प्रकार रामचरित मानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि राम चरित मानस केवल राम काव्य नहीं है। वह एक शिव काव्य भी है, हनुमान काव्य भी है, व्यापक संस्कृति काव्य भी है। अतः समग्रतया तुलसीदास रचित रामचरितमानस एक सफल विश्वव्यापी महाकाव्य रहा है।

डॉ॰ मनोज कुमार उपध्याय
(सहायक–प्राध्यापक)
टी॰एन॰ए॰टी॰टी॰सी॰, 'हरिगाँव' आरा

कॉलेज के कार्यक्रमों की झलकियाँ

कॉलेज के कार्यक्रमों की झलकियाँ

कॉलेज के कार्यक्रमों की झलकियाँ

कॉलेज के कार्यक्रमों की झलकियाँ

राष्ट्र-गान

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्रविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ अशीष माँगे।
गाहे तब जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय, जय हे।

वंदे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
सस्य श्यामलां मतारम्
शुभ्र ज्योत्सनाम् पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीसुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।।

सप्त कोटि कन्ठ कलकल निनाद कराले
द्विसप्त कोटि भुजैर्ध्रत खरकरवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम्।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म
त्यं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदयतुमि मा भक्ति,
तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे।।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्।।

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्।।